موضوع الخطبة: فوائد الصلاة على المصطفى

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم: فيض الرحمن التيمى

उपदेश का शीर्षक:

मुसतफा सल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने के फ़ायदे

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ **)**
(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)
(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्करित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुस्लमानो अल्लाह का तकवा अपनाओ और उसी से डरते रहो, उसकी आज्ञा करो और उसके अवज्ञा से बचो और जान लो कि पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजने से दस लाभ प्राप्त होते हें।

1 –अल्लाह ने पैगम्बर स अ व पर दरूद भेजने का जो आदेश दिया है उसका पालन होगा जो कि अल्लाह के इस कथन में आया है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

(الأحزاب:56)

अर्थात: ''अल्लाह और उस के देवदूत उस नबी पर कृपा भेजते हैं,ए ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और अति सलाम भी भेजते रहा करो''

2–दासों का अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजना एक प्रार्थना है जो एक स्थाई पूजा का महत्व रखता है और जिस का अल्लाह ने आदेश दिया है और उस पर पुण्य भी रखा है।

3– जो व्यक्ति एक बार पैगम्बर स अ व पर दरूद भेजता है अल्लाह तआला की ओर से उस व्यक्ति को दस कृपा प्राप्त होते हैं, जैसा कि आप स अ व का कथन है:

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا (مسلم: 384)

अर्थात: जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह इस कारण से उस पर दस कृपा भेजता है।

और बदला कर्म ही के लिंग से होता है, अतः जो अल्लाह के पैगम्बर स अ व की प्रशंसा करता है अल्लाह तआला भी उस कार्य का बदला उसी प्रकार प्रदान करता है वह इस प्रकार कि उसकी प्रशंसा करता है और उसके मान सम्मान में व्धि करता है।

4–दरूद पढने वाले व्यक्ति की प्रतिष्ठा दस गुना बढ जाती है, उस के लिए दस पुण्य लिख दिया जाते हैं जैसा कि अबदूल्लाह बिन अमर रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है वह फरमाते हैं कि पैगम्बर स अ व ने फरमाया:

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ، وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ، وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ

अर्थात: जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उस पर दस कृपा भेजता है,उसके दस पाप को मिटा देता है और उस के दस श्रेणी को बढ़ा दिया जाता है।

''इसे नेसाई ने अल सोनन अल कुबरा में वर्णन किया है हदिस संख्या:1221''

5– अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजना पापों के मिटने का कारण बनता है और दास के लिए गम और दख से मुक्ति का कारण बनता है।

''1– इसे तिरमीजी ने वर्णन किया है 2457 और इसमाईल अलकाजी ने फजलुस्सलात अला अलनबी स अ व 14 में इसी प्रकार वर्णन किया है और अहमद 5/136 में इसे संक्षेप में वर्णन किया है और अलबानी रहिमहुल्लाह ने अलसहीहा के

अंदर हदीस संख्या 954 के अंतर्गत इसे हसन कहा है।''

अर्थातः**ओबैय बिन कअ़ब** रजिअल्लाहु अनहु कहते हैं कि जब दो तीहाई रात बीत जाती तो रसूल सल्लाहु अलिहे वसल्लम उठते और फरमातेः लोगो! अल्लाह को याद करो ,खरखराने वाली आगई है और उसके साथ एक दूसरी आलगी है, मौत अपनी सेना लेकर आगई है मौत अपनी सेना लेकर आगई है, मैने कहाः ए अल्लाह के नबी में आप पर अति दरूद भेजता हॅू तो आप बता दीजीए कि कितना समय आप पर दरूद भेजने के लिए नीकालॅू ? आप ने फरमायाः तूम जितना चाहो, मेंने कहाः एक चौथाई? आप ने कहाः तुम जितना चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुमहारे लिए अच्छा है, मैंने कहा :आघा? आप ने फरमायाः जितना तुम चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुम्हारे लिए अच्छा है, मैंने कहाः दो तीहाई? आप ने फरमायाः जितना तुम चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुम्हारे लिए अच्छा है, मैंने कहाः पूरी रात? आप ने कहाः तब तुम्हारे सारे गम खत्म हो जाऐंगे और सारे पाप भी मिट जाऐंगे।

''इसे तिरमीजी 2457 ने वर्णन किया है,अह़मद 5/136 ने संछेप मे वर्णन किया है और अलबानी 945 ने सत्य कहा है।''

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैंः इस व्यक्ति ''ओब्य बिन काब रजिअल्लाहु अनहु ''के पास एक विशेष प्रार्थना थी जो वह अल्लाह से किया करते थे, किंतु जब से उन्होंने अपनी विशेष प्रार्थना को छोड़ कर आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजना प्रारंभ किया तब से अल्लाह उनके संपूर्ण दुनयावि व उुखरवि कठिनाईयों के लिए काफि हो गया,और वह जब भी आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजते अल्लाह उन पर दस कृपा भेजता और यदि वह कभी किसी मोमिन के प्रति दुआ करते तो देवदूत आमीन कहने के साथ यह भी कहते हैं कि आपके लिए भी एसा ही हो, अतः उनका आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम के लिए प्रार्थना करना अधिक उचित है,

''इब्ने तैमिया का कथन समाप्त हूआ'' :''मजमउल फतावा 1/193''

6–नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन भेजने का छटा लाभ यह है कि जब दूआ करने वाला अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन भेजने के साथ उस में आपके लिए वसीला की भी दूआ करता है तो यह उसके प्रति अनुशंसा का कारण बनता है।

अर्थातः'' हजरत अबदुल्लाह बिन आस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि उन्होंने नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जब तुम मोअज़्ज़िन को सुनो तो उसी प्रकार कहो जैसे वह कहता है फिर मुझ पर अभिवादन भेजो कियों कि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह तआला उस के बदले उस पर दस कृपा भेजता है,फिर अल्लाह से मेरे लिए वसीला मांगो क्यिों कि वह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के दासों में से केवल एक दास को मिलेगा और मुझे आशा है कि वह में ही हूॅगा,तो जिसने मेरे लिए वसीला मांगा उसके लिए मेरी अनुशंसा अनिवार्य हो गई।'' ''मुस्लिम 384''

7—जब प्रार्थना करने वाला अपनी प्रार्थना से पूर्व अभिवादन करता है तो इस बात का आशा होता है कि प्रार्थना स्वीक्रत होगी क्यिों कि दरूद एक दास के प्रार्थना को अल्लाह के दरबार तक पहूॅचा देती है।

अर्थातः ''उमर बिन खत्ताब रजिअल्लाहु अनहु कहते हैंः प्रार्थना आकाश एवं पृथवी के मध्य में रहती है उस से थोड़ा भी उपर नहीं जाती जब तक कि तुम नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन नहीं भेज देते।''

''तिरमीजीः486 अलबानी ने सही कहा है''

8—दरूद पढ़ना इस बात का कारण है कि उसका दरूद नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर प्रस्तुत किया जाता है,जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम का कथन इस बात का साक्ष्य हैः

अर्थात : तुम्हारा अभिवादन मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

''हदिस का एक टुकड़ा है जिसे अह़मद 8/4 आदि ने औस बिन अबू औस से वर्णन किया हैं,और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने सत्य कहा है 16162''

एक व्यक्ति के लिए इस से बड़ी प्रतिष्ठा की बात और किया हो सकती है कि उसका अभिवादन नबी पर प्रस्तुत किया जाए।

9—दरूद किसी सभा को शुद्ध करने का कारण है उस सभा के तुलना में जिस में आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद नहीं भेजा गया हो,निसंदेह क़यामत के दिन एसा सभा,सभा आयोजकों पर अफसोस का कारण बनेगा।

अर्थातः अबू होरैरा रजिअल्लाहु से वर्णन है वह कहते हैं कि पैगम्बर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिस भी सभा में अल्लाह का उल्लेख न किया गया हो और न ही अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजा गया हो तो वह सभा क़ियामत के दिन कमी का कारण होगी,यदि अल्लाह चाहे तो सभा वालों को छमा प्रदान कर दे और यदि चाहे तो उन की पकड़ करे ''

''इसे अहमद 4842/2 आदि ने वर्णन किया है और मुस्नद के शोधर्कताओं ने 10277 सत्य कहा है और अलबानी ने अलसिलसिला अल सहीहा 156/1 में उल्लेख किया है''

10ःदरूद पढ़ना पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम के प्रेम में स्थिरता एवं वृद्धि का कारण है और यह ईमान के अनुबंध में से एक अनुबंध है जो प्रेम के माध्यम से ही पूरा हो सकता है क्यिों कि कोई व्यक्ति जितना अधिक अपने प्रेमि को याद करता है उसके गुणो और उसके प्रेम की ओर आकर्षित करने वाले गुणो को अपने ध्यान में ताजा करता है,उसके प्रेम में इसी प्रकार वृद्धि होता है ,प्रेमि से मिलन का शोक बढ़ता चला जाता है और पूर्णरूप से उसके हृदय पर हावी हो जाता है और जब वह अपने प्रेमि को याद करना छोड़ देता है और उसके गुणों को दिल से निकाल देता है तो हृदय में उसका प्रेम भी कम हो जाता है।

एक प्रेम करने वाले व्यक्ति की ऑखों को प्रेमि के दिदार से बढ़ कर कोई चीज ठंडक नहीं पहुॅचा सकती।

पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजने के यह दस लाभ हैं जो इबने क़यियम रहिमहुल्लाह की पुस्तक'' जलाउल अफहाम'' का सार है।

अल्लाह मुझे और आप को पवित्र क़ुरान की बरकत से लाभ पहूॅचाए,उसकी आयतों एवं प्रज्ञता पर आधारित परामर्शों से मुझे और आपको लाभ पहूॅचाए,में अपनी यह बात कहते हूए अपने लिए और आप के लिए अल्लाह से छमा प्राप्त करता हूॅ अतः आप भी अपने पापों की छमा प्राप्त करें, निसंदेह वह तौबा स्वीकार करने वालों को अति छमा प्रदान करता है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله و كفىٰ وسلام على عباده الذين اصطفى،أمابعد!!!

ए मुस्लमानों! नबी सल्लाहु अलैहे वसल्लम पर दरूद भेजने में आप के लिए वसीला व फजीला की प्रार्थना करना भी शामिल है और यह भी कि अल्लाह तआला आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम को उस मक़ामे मह़मूद तक पहूँचाए जिस का अल्लाह ने आप से वादा किया है,क्यिों कि यह पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिए प्रतिष्ठा और प्रशंसा की प्रार्थना है और यही आप पर दरूद भेजने का अर्थ है,इसका साक्ष्य जाबिर बिन अबदूल्लाह रजिअल्लाहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

अर्थातः जो व्यक्ति अज़ान सुनते समय यह प्रार्थना पढ़े:

(اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلاَةِ القَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الوَسِيلَةَ وَالفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ)

''हे अल्लाह! इस संपूर्ण दावत व क़ाइम होने वाली नमाज़ के रब! पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम को वसीला व प्रतिष्ठा प्रदान कर और उनको उस स्थान तक पहूँचा जिस का तू ने उन से वादा किया है''

तो कियामत के दिन उस के लिए मेरा प्रामर्श अनिवार्य होगा।

''बोखारी 614''

अर्थातः हजरत अबदूल्लाह बिन अमर बिन आस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि उन्हों ने पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम को सुना आप फरमा रहे थेः जब तुम मोअ़ज्जिन को सुनो तो उसी प्रकार कहो जैसे वह कहता है फिर मूझ पर दरूद भेजो कियों कि जो मूझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उस के बदले उस पर दस कृपा भेजता है,भिर अल्लाह से मेरे लिए वसीला मांगो क्यिों कि वह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के दासों में से केवल एक दास को प्रदान किया जाएगा और मूझे आशा है किवह में ही हूंगा,इस लिए जिस ने मेरे लिए वसीला मांगा उस के लिए मेरी अनुशंसा अनिवार्य होगी'' ''मुस्लिमः 384''

वसीला का अर्थ स्वर्ग के अंदर उच्च स्थान और फजीला का तात्पर्य सामान्य प्रतिष्ठा एवं सौभाग्य व पुण्य है, पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के कथन ''मक़ामे मह़मूद''में ''मह़मूद'' का अर्थ वह स्थान है जहॉ खरे होने वाले की प्रशंसा कि जाए और ''मक़ाम''का अर्थ हिसाब व किताब के आरंभ के लिए खरे होने वाले के प्रति शिफाअ़ते कुबरा है और उस स्थान पर खरे होने वाले पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम हैं, ईस का साक्ष्य अबू होरैरा रज़िअल्लाहु अनहु की ह़दीस है वह कहते है कि पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

‘‘इसे अह़मद 2/478 ने रिवायत किया है,मुस्नद के शोधकर्ताओं ने हसन लेगैरेहि कहा है इसी प्रकार इबने जरीर ने सूरह इसरा आयत संख्या 79 की तफसीर में वर्णन किया है’’

अर्थातः ‘‘मकामे मह़मूद का अर्थ प्रामर्श है’’

हदीस के अंत में अल्लाह के नबी का कथन हैः ‘‘मेरा प्रामर्श दरूद पढ़ने वाले के लिए ह़लाल हो जाएगी’’ यह इस बात का प्रतीक है कि बदला कार्य के लिंग से ही मिलता है।

इसलिए जब प्रार्थना करने वाला अल्लाह के नबी के लिए यह प्रार्थना करता है कि अल्लाह आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम को मक़ामे मह़मूद प्रदान करदे तो इस कारणवश प्रार्थना करने वाला इस बात का पात्र बनजाता कि वह उन व्यक्तियों की श्रेणी में शामिल हो जाता है जिन के प्रति पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने पापों की छमा और प्रतिष्ठा की उठान का प्रामर्श करेंगे।

हे अल्लाह! तू हमें ऐसे लोगों में शामिल फरमा जिन को तेरे पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का प्रामर्श प्राप्त हो!

आप यह जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे –कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक महान कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

अर्थातः जो भी मुस्लमान अल्लाह के पैगम्बर पर अधिक से अधिक दरूद भेजेगा अल्लाह तआ़ला उस के हृदय को आलोकित कर देगा,उसके पापों को छमा प्रदान करेगा,उसके हृदय को खोल देगा और उसके मामलों को आसान कर देगा,अतः अधिक से अधिक दरूद का पाठ किजिये।

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.
(الأحزاب:56)

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने समुदाय को शुक्रवार के दिन अपने ऊपर अधिक से अधिक दुरूद (इभिादन) भेजने का अ ादेश दिया है आपका कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।"

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे,तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे,तू अपने मुवह़्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर। हे अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे।

हे अल्लाह ! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे।

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले ,सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से|

अल्लाह कठिनाईयॉ पापों के कारण ही जन्म लेती हैं और तौबा के माध्यम से ही दूर होती हैं,हमारे हाथ तेरे द्वार में उठे हूए हैं,हमारे सर तेरे द्वार में झुके हूऐ हैं, हे अल्लाह तू हम से इस महामारी को दूर करदे, निसंदेह हम मुस्लमान हैं।

हे अल्लाह जिसका भी इस महामारी के कारण निधन होगया है उन पर कृपा फरमा और जो लोग इस के कारण रोगाी हैं उनको स्वास्थ्य और पूण्य प्रदान कर!

हे हमारे पालनहार हमें दुनयॉ व आखेरत की अच्छाई प्रदान कर और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

लेखक: माजिदबिनसुलेमानअलरसी

३०जमादुल-आिखर,सन्१४४२हिजरी

जूबैल,सऊदीअरब

अनुवाद: फैज़ुररह़मानहि़फज़ुररह़मानतैमी

binhifzurrahman@gmail.com

@Ghiras_4T